Q. 15 जॉर्ज बर्कले के आत्मा सम्बन्धी सिद्धान्त की व्याख्या करें, तथा बर्कले किस प्रकार भौतिकवाद का खण्डन करते हैं?

Ans :→ पाश्चात्य दर्शन के जाने माने अनुभववादी दार्शनिक जॉर्ज बर्कले का जन्म आयरलैण्ड के किल्केनी (Kilkenny) प्रान्त में सन् 1685 ई० में हुआ था। पाश्चात्य दर्शन के इतिहास में जॉर्ज बर्कले का विज्ञानवाद अत्यन्त महत्वपूर्ण है और अध्यात्मवाद ग्रन्थ सिरिज में विशद व्याख्या की गई है। इस ग्रन्थ में बर्कले ने पूर्णतः भौतिकवाद का खण्डन किया है। जॉर्ज बर्कले के अनुसार संसार की प्रत्येक वस्तु परम निःश्रेयस (Supreme good) से संचालित होती है। अतः जगत निष्प्रयोजन तथा भौतिक नहीं, वरन् सप्रयोजन तथा आध्यात्मिक है। बर्कले के अनुसार दर्शन की दो मौलिक समस्याएँ हैं- (i) भौतिकवाद का खण्डन और (ii) अध्यात्मवाद का मण्डन। इस अध्यात्मवाद या ईश्वरवाद की सिद्धि के लिए बर्कले प्रत्ययवाद (Idealism) का सहारा लेते हैं या उनका ईश्वरवाद प्रत्ययवाद पर आधारित है। प्रत्ययवाद या विज्ञानवाद वस्तु के स्थान पर विज्ञान को ही सत बतलाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार हमें वस्तु की नहीं, वरन् विज्ञान की ही उपलब्धि होती है। बर्कले अपने विज्ञानवाद की सिद्धि से ईश्वर, आत्मा इत्यादि आध्यात्मिक विषयों की सिद्धि करते हैं। इसलिए विज्ञानों का अस्तित्व मन या आत्मा पर निर्भर होता है अतः वस्तुओं का अस्तित्व भी आत्मनिर्भर होता है।

आत्म सापेक्षता

जॉर्ज बर्कले का कहना है कि सम्पूर्ण जगत मन या आत्मा पर निर्भर है। आत्मा ही द्रष्टा या अनुभवकर्ता है। आत्मा में अनुभव करने की शक्ति परमात्मा या ईश्वर की देन है। ईश्वर-प्रदत्त शक्ति के कारण ही आत्मा इन्द्रिय विज्ञानों का अनुभवकर्ता होता है।

वस्तुतः बर्कले अनुभववाद के न तो जन्मदाता है और न तो ~~उनके~~ अंत में अनुभववाद के अन्त का कर्ता है फिर भी जॉर्ज बर्कले अनुभववाद को विकसित ~~[illegible]~~ किया है। जड़ तत्व के निराकरण के पश्चात् बर्कले ने इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सत्ता अनुभवमूलक है। अर्थात् अनुभवविहीन सत्ता मान्य नहीं है क्योंकि अस्तित्व अनुभवात्मक है। होना (Esse)

प्रत्यक्ष होना (Percipii) दोनों एक है। ऐसी सत्ता हीन ही जिसका हमें प्रत्यक्ष न हो। बर्कले विज्ञानवादी है, वे विज्ञान के अतिरिक्त वे वस्तु की सत्ता स्वीकार नही करते है। वस्तु विज्ञानरूप ही है, जिसे हम बाह्य वस्तु कहते है। जिसका वस्तु बाह्य इन्द्रिय है। ~~अर्थात~~ हमारे ज्ञान का विषय अर्थात ज्ञेय विज्ञान ही है क्योंकि विज्ञान के अतिरिक्त हमें किसी वस्तु का ज्ञान नही होता है। इसलिए बर्कले कहते है कि जो भी ज्ञेय है वही सत है। ज्ञेय विषय तो केवल विज्ञान ही है, विज्ञान ही सत है, वस्तु नही। ज्ञेय के लिए ज्ञाता की अपेक्षा, अनुभव, अनुभावक या अनुभवकर्ता - सापेक्ष है।

इसप्रकार अनुभवकर्त्ता तो केवल आत्मा है, तथा अनुभव के विषय विज्ञान है। इसलिए ज्ञाता (आत्मा) को विषय कहा जाता है। विज्ञान (ज्ञेय) को सत्ता कहते है।

ज्ञेय ज्ञानरूप होने से ज्ञाता से पृथक नही यह सम्भव नही कि ज्ञेय की सत्ता रहे तथा ज्ञाता की न रहे। जैसे - हम कहते है, घट है घट का अस्तित्व या सत्ता है, परन्तु घट के अस्तित्व का ज्ञान भी हमारे देखने या स्पर्श करने पर निर्भर है। यदि घड़ा कमरे में है और मै वहाँ न रहूँ तो इसका अर्थ है कि घड़े की सत्ता है क्योंकि यदि मै उस कमरे मे रहूँगा तो अवश्य घड़ा का रूप देखता रहूँगा क्योंकि यदि मै न देखूँ तो उसे कोई और देखेगा परन्तु उसका अस्तित्व देखने पर ही आश्रित है।

अर्थात बर्कले का कहना है कि "यदि कोई देखने वाला नही, अर्थात अनुभवकर्ता नही, तो अनुभव का विषय हो सकता है। अनुभव हमें सत्ता या अस्तित्व का ही होता है अर्थात सत्ता का अनुभवमूलक है, अथवा ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता के प्रत्यक्ष पर आश्रित है। यदि किसी विषय को यदि हम कहे कि है तो इसका अर्थ है कि वह प्रत्यक्षगम्य है, अर्थात 'होना' तथा 'प्रत्यक्ष होना' में तादात्म्य सम्बन्ध है।" अपने ग्रन्थ के तृतीय अध्याय में सत्ता तथा अ

का तदात्म्य में बतलाते हुए जार्ज बर्कले कहते हैं कि "हमारे

विचार, भाव या कल्पना द्वारा निर्मित प्रत्यक्ष किसी का भी मन के बिना अस्तित्व नहीं है। इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रत्यक्ष करनेवाले मन के बिना किसी का अस्तित्व ही नहीं। अ अस्तित्व शब्द का प्रयोग ही संवेद्य विषयों के लिए किया जा है। संवेद्य विषय ही प्रत्यय या विज्ञान हैं जो संवेदनकर्ता मन या आत्मा पर निर्भर है। बर्कले एक उदाहरण के द्वारा इसे स्पष्ट करते हैं कि 'मैं एक मेज पर लिख रहा हूँ जिस पर (मेज) पर मैं लिख रहा हूँ, वह है (क्योंकि) मैं उसे देखता हूँ, स्पर्श करता हूँ। यदि मैं अपने अध्ययन-कक्ष के बाहर होता तब भी मैं कहता कि वह मेज है, क्योंकि यदि मैं भीतर होता तो उसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता था। यदि मैं नहीं तो कोई और इसका प्रत्यक्ष करता, परन्तु बिना प्रत्यक्ष के इसकी सत्ता स्वीकार्य नहीं। जिस प्रकार मेज का अस्तित्व देखने पर है, उसी प्रकार अन्य वस्तुओं का भी।

इस प्रकार इसी दृष्टि से बर्कले कहते हैं कि अस्तित्व (ESSe) का अर्थ होता है अनुभव करना तथा प्रत्यक्ष होना (Percipi) है। उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि मेज का अस्तित्व अनुभव पर है, गन्ध का अस्तित्व सूँघने पर है, तथा रूप का अस्तित्व देखने पर है। अतः हम कह सकते हैं कि बर्कले बाह्य पदार्थ की सत्ता का पूर्णतः निषेध करते हैं। उनके नजर में विज्ञान ही सत है। विज्ञान अभौतिक पदार्थ है, इनकी सत्ता बाह्य नहीं, आन्तरिक है। ये आत्मा या मन पर आश्रित हैं।

बर्कले के आत्मा सम्बन्धी विचार :→ बर्कले प्रत्ययों के अतिरिक्त आत्मा को भी सत मानते हैं। उनके अनुसार आत्मा अदृश्य है। इसकी सत्ता इसका प्रत्यक्ष होता है। बर्कले का कहना है कि "यदि हम अपने मन का सर्वेक्षण करें तो हमें यहाँ बाह्यदोष स्पष्टतः प्रतीत हो जाएगा। वस्तुतः हमारा ज्ञान तो इन्द्रिय जन्य है और इन्द्रियों का प्रत्यय या विज्ञान

से भिन्न किसी वस्तु का ज्ञान नहीं होता। ~~अतः~~ उपरोक्त सभी विषय बाह्य नहीं, ~~अपितु~~ आन्तरिक है, वस्तु नहीं विज्ञान है। मन या आत्मा के बिना उनका कोई अस्तित्व ही नहीं, क्योंकि उनकी सत्ता केवल दृश्यता या ज्ञेयता है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि बर्कले ज्ञान के विषय नदी, पर्वत, घर इत्यादि को बाह्य नहीं, आन्तरिक प्रत्यय या विज्ञान मानते है। बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है कि "मै वस्तु को विज्ञान नहीं बनाता, ~~बल्कि~~ क्योंकि विज्ञान को वस्तु बना रहा हूँ।" जार्ज बर्कले दार्शनिक एक उदाहरण द्वारा पेश करते है कि मैं जिस मेज पर लिख रहा हूँ वह क्या है? यह मेज तो केवल रूप, आकृति, विस्तार, इत्यादि प्रत्ययों का समुदाय मात्र है। इन प्रत्ययों के अतिरिक्त मेज कुछ भी नहीं है।

बर्कले ने आत्मा की सत्ता को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित उक्तियों का सहारा लिया है –

(i) आत्मा का ~~इन्द्रियों~~ इन्द्रियबोध नहीं, साक्षात अन्तर्बोध (notion) होता है। आत्मा का ज्ञान प्रातिभ-ज्ञान है। बर्कले का कहना है कि "मै जानता हूँ कि 'मैं' और स्वयं मैं इन शब्दों का क्या अर्थ करता हूँ। मै इसे अपरोक्ष ~~तथा~~ या प्रातिभ ज्ञान से जानता हूँ। यद्यपि मैं इसे उस प्रकार नहीं प्रत्यक्ष करता हूँ कि जैसे – मै किसी त्रिभुज, वर्ग, या ध्वनि का कर्ता हूँ।" बर्कले आत्म प्रत्यक्ष को प्रातिभ ज्ञान देकार्त के भाँति ही करते है। कभी-कभी वे यह भी कहते पाये गए है कि उन्हें आत्मा का बोध होता है। बोध क्या है? और यह प्रत्यक्ष से किस प्रकार भिन्न है? इसकी विशद व्याख्या जार्ज बर्कले ने न करके, सिर्फ बोध के विषय मे केवल यही बतलाया है कि "आत्मा और ~~प्रत्ययों के लि~~ मानसिक प्रक्रियाएँ तथा

(ii) उनके बीच प्रत्यय तथा प्रत्ययों के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है। इसी चीज का पश्चात्य दर्शन मे उन्होंने जिक्र किया है।

बर्कले बोध और प्रत्ययों के बीच इस प्रकार का अन्तर मानते है कि (क) प्रत्यय और ... सरजौवट दार्शनिक के अनुसार

Scanned with CamScanner

या इन्द्रियजन्य है किन्तु बोध बौद्धिक प्रतिक्रिया का परिणाम है। प्रत्ययों से विशेषों का ज्ञान होता है किन्तु बोध से सार्वभौमिकता का ज्ञान मिलता है साथ ही मानव और (3) पशु में प्रत्यय समान रूप से पाये जाते हैं किन्तु बोध केवल मनुष्यों में ही पाया जाता है।

(ii) आन्तरिक भावना या मनन से भी बर्कले आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं। उनके शब्दों में "हम अपने अस्तित्व को अनुभव आन्तरिक भावना या मनन से करते हैं। पुनः अपने अस्तित्व को अर्थात् अपनी आत्मा मन या चित द्रव्य को मैं स्पष्टता पूर्वक मनन से जानता हूँ।" बर्कले पाश्चात्य दर्शन में कहते हैं कि "मैं अपने अस्तित्व को जानता हूँ या इससे संचेत हूँ, मैं स्वयं अपना प्रत्यय नहीं हूँ किन्तु अपने प्रत्ययों से भिन्न हूँ एक सत्ता हूँ चित और कर्ता सत्त हूँ जो प्रत्यय कर्ता है जानता है और प्रत्ययों का व्यवसाय करता है।" जार्ज बर्कले का कहना है कि मनन के द्वारा आत्मा की सत्ता कई प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है। (क) 'ड्रयम' द्रव्य से सम्बद्ध है द्रव्य के रहने पर भी ड्रयम सम्भव है इसलिए ड्रयम अपने द्रव्य अर्थात आत्मा को प्रमाणित करता है।

(ख) जिन प्रत्ययों को हम देखते हैं कि उनके संघात, मिलान (तुलना) स्मरण इत्यादि के लिए आत्मा की सता मानना आवश्यक है। आत्मा प्रत्ययों का आश्रय और कारण है। ऐसा सोचने में कोई असंगति नहीं होती।

(iii) आत्मा का अस्तित्व उसके अपना कर्तापन है। आत्मा के कर्तापन को बर्कले ने अनुभव और युक्ति के आधार पर सिद्ध करते हैं। अनुभव के आधार पर जार्ज बर्कले का कहना है कि "मैं इच्छानुसार अपने मन में प्रत्ययों को उत्तेजित कर सकता हूँ। यह मात्र इच्छा व्यापार है, प्रत्ययों को इस प्रकार बनाना या बिगाड़ना कर्तापन का उपर्युक्त लक्षण निर्धारित करता है।" बर्कले प्रत्ययों के सतत अनुक्रम का प्रत्यक्ष करते हैं। कुछ नये ढंग से उत्तेजित हैं तो कुछ परिवर्तित हैं या पूर्णतया ओझल हो जाते हैं। अतः इन प्रत्ययों का कुछ कारण है जिस पर ये आश्रित हैं और जो इनको उत्पन्न तथा परिवर्तित करता है।"

Scanned with CamScanner

जार्ज बर्कले का आत्मा विचार के सम्बन्ध में कहना है कि "यह कारण कि कोई गुण या प्रत्यय/प्रत्यय संघात नहीं हो सकता है। इसलिए कोई द्रव्य होना निश्चित है फिर भी यह सिद्ध किया जा चुका है कि कोई दैहिक या भौतिक द्रव्य नहीं है। इसलिए परिशेष से सिद्ध है कि प्रत्ययों का कारण कोई अदैहिक सक्रिय द्रव्य या आत्मा है।" यहाँ आत्मा को दो रूपों में माना है - (i) आत्मा द्रष्टा और (ii) कर्ता दोनों है। जार्ज बर्कले ने आत्मा को उपयुक्त लक्षण कर्ता होना मानते है। कर्ता का द्रष्टा होना इसका उपलक्षण कहा जा सकता है।

लेकिन ह्यूम दार्शनिक ने बर्कले की युक्तियों को दोषपूर्ण या गलत बताया है। ह्यूम का कहना है कि बर्कले के अनुसार आत्मा का अनुभव नहीं होता है तो फिर भी आत्मा का अस्तित्व कैसे माना जा सकता है? बर्कले ने ह्यूम के आक्षेपों का स्पष्ट उत्तर देते हुए कहते है कि दो प्रत्ययों की तुलना करने के लिए या प्रत्ययों को सम्बद्ध बनाने के लिए इनसे भिन्न किसी तत्व की आवश्यकता पड़ती है। यही आत्मा है।

जार्ज बर्कले के अनुसार आत्मा का स्वरूप :→ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में जार्ज बर्कले ने आत्मा के स्वरूप के विषय में कहा है कि "आत्मा प्रत्ययों का प्रत्यक्ष करता है। इसलिए इसे 'बुद्धि' कहा जाता है। यह बुद्धि के विकार को उत्पन्न करता है इसलिए इसे 'इच्छा' भी कहा जाता है।" इस प्रकार जार्ज बर्कले के अनुसार आत्मा को विचार की संज्ञा नहीं दी जा सकती, क्योंकि यदि आत्मा प्रत्यय है तो यह क्षणभंगुर परिवर्तनशील प्रत्ययों के समान क्षणिक सत्ता हो जाएगी, क्योंकि "सभी प्रत्यय निष्क्रिय और उदासीन होने के कारण कल्पना एवं प्रतिनिम्ब के द्वारा हम अभिव्यक्त नहीं कर सकते जो कर्ता करता है।"

इस प्रकार बर्कले ने आत्मा के प्रत्ययों का प्रवाह मात्र मानने से इनकार किया है। जबकि ह्यूम दार्शनिक ने आत्मा को नित्य चेतन तथा क्षणभंगु

Scanned with CamScanner

अविच्छिन्न (2)

प्रत्ययों का ~~अविच्छिन्न~~ प्रवाह माना है।

वस्तु, आत्मा को प्रत्ययों का प्रवाह-मात्र मान लेने से कोई स्थायी तत्व नहीं बचता। ~~जिससे~~ ज्ञानमीमांसा की व्याख्या नहीं की जा सकती, जिससे संशयवाद का आविर्भाव होता है। ह्यूम के संशयवाद के दर्शन से बचने के लिए ही जार्ज बर्कले आत्मा को प्रत्यय से भिन्न मानते हैं। जार्ज बर्कले ज्ञान के विषय नदी, पर्वत, घर इत्यादि को बाह्य नहीं, आन्तरिक प्रत्यय या विज्ञान मानते हैं। बर्कले की प्रसिद्ध उक्ति है कि "मैं वस्तु को विज्ञान नहीं बनाता, वरन् विज्ञान को वस्तु बनाता हूँ। 'विज्ञान को वस्तु' कहने का तात्पर्य है कि ज्ञेय विषय विज्ञान ही है। हमें ज्ञान प्रत्ययों या विज्ञानों का ही होता है।" इन प्रत्ययों के लिए किसी बाह्य वस्तु की कल्पना तो निरर्थक है। प्रत्यय तो मनाश्रित हैं। इसकी सिद्धि के लिये बर्कले एक उदाहरण के द्वारा पेश किया है – मैं जिस मेज पर लिख रहा हूँ वह क्या है? यह मेज तो केवल रूप, आकृति, विस्तार इत्यादि प्रत्ययों का समुदाय मात्र है। इन प्रत्ययों के अतिरिक्त मेज कुछ भी नहीं। मेज तो शब्द होने के कारण एक संज्ञा-मात्र है जिसके सुनने से केवल प्रत्ययों के समुदाय का बोध होता है जैसे – रूप-प्रत्यय, विस्तार-प्रत्यय, आकृति-प्रत्यय इत्यादि। अतः जब हम कहते हैं कि 'मेज है' तो इसका अर्थ है कि इसके प्रत्ययों का हमें अनुभव हो रहा है, अर्थात् विशेषरूप से अनुभवमूलक सत्ता की प्राप्ति होती है। अनुभवमूलक का तात्पर्य है कि सत्ता प्रत्यक्ष ~~गम्य~~ है क्योंकि इन्द्रियों से हमें जगत् की सत्ता तथा सांसारिक घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। बुद्धि के द्वारा हमें इन घटनाओं के कार्य-कारण सम्बन्ध का ज्ञान होता है।

इस प्रकार आत्मा-परमात्मा तथा अन्य वैज्ञानिक नियमों का ज्ञान हमें बुद्धि द्वारा ही होता है। अतः स्पष्ट है कि इन्द्रियों से अनुभव और बुद्धि से ज्ञान प्राप्त होता है। क्योंकि इन्द्रियों को ज्ञान नहीं और बुद्धि को अनुभव नहीं।

जार्ज बर्कले के आत्मा सम्बन्धी सिद्धान्त के निम्नलिखित लक्षण हैं – (i) आत्मा विज्ञान से भिन्न है। (ii) विज्ञान ज्ञेय है तथा आत्मा ज्ञाता है। [illegible]

Scanned with CamScanner

भूतिगम्य है। यद्यपि त्रिभुज या ध्वनि के समान इसका प्रत्यक्ष सम्भव नहीं है भी यह स्वानुभूतिगम्य है, अर्थात अपना अनुभव ही इसका प्रमाण है। (IV) आत्मा निष्क्रिय नहीं, सक्रिय है। स्वसंवेदनाओं की सृष्टि तथा ईश्वरसृष्टि संवेदनाओं का ग्रहण आत्मा के कार्य है। (V) आत्मा सभी मानसिक क्रियाओं का आधार है, जैसे - इच्छा करना, कल्पना करना, अनुभव करना, स्मरण करना इत्यादि।
(VI) अन्य आत्माओं के अस्तित्व का ज्ञान हमें बुद्धि (Reason) के द्वारा होता है, परन्तु अपनी आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान हमें स्वतः अनुभूति से होता है।

क्योंकि जार्ज बर्कले आत्मा की अमरता में विश्वास करते है। इनका कहना है कि आत्मा स्वभाव से अमर है, आत्मा शरीर से भिन्न है, आत्मा सदा चैतन्य है, वह नित्य चेतन है यह चेतना कर्ता और दृष्टा है। इस प्रकार जार्ज बर्कले के शब्दों में "चाहे जिस ढाँचे और बनावट के शरीर की देह सभी मन से मात्र निष्क्रिय प्रत्यय और मन देह से जितना दूर और भिन्न है उतना ही प्रकाश भी अन्धकार से नहीं है।

जार्ज बर्कले का कहना है कि आत्मा अविभाज्य, अशरीरी, अविस्तारी और निर्दोषी है, शरीर ... है, गतिशील है, परिवर्तनशील है, विनाशकारी है और ... भी है जो समय-समय पर प्राकृतिक पिंडों में घटित देखे जाते है। पाश्चात्य दर्शन के जाने माने दार्शनिक जार्ज बर्कले ने अध्यात्मवाद से जुड़े हुए दार्शनिकों के अनुसार आत्मा के सत्य के बारे में विचार प्रकट करते हुए बर्कले का कहना है कि आत्मा सदा चैतन्य (Consciousness) है, आत्मा का चैतन्य से अविभाज्य सम्बन्ध (inseparable relation) है, वह नित्य चेतन है। उसका नित्य चैतन्य उसके एकत्व (Identity) और स्थायीपन (Permanence) का आधार कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

यह चेतना कर्ता और द्रष्टा दोनो है। जार्ज बर्कले ने एक जगह

के द्वारा कहा है कि - मृत्यु के बाद शरीर का अन्त हो जाता है लेकिन आत्मा का अन्त नही होता। मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्व कायम रहता है। इस प्रकार बर्कले शरीर के नाश के बाद भी आत्मा का अस्तित्व स्वीकार करते हुए गीता के आत्मा सम्बन्धी विचारों का समर्थन करते हैं।

गीता मे कहा गया है कि आत्मा को कोई शस्त्र नही काट सकता, अग्नि इसे नही जला सकती, जल इसे नही भिंगो सकता और वायु इसे नही सुखा सकती। अतः आत्मा अमर है और शरीर के नष्ट होने पर भी इसका ~~अस्तित्व~~ अस्तित्व बना रहता है। ~~केयर दार्शनिक~~

श्लोक जैसे - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
नचैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

फ्रेजर दार्शनिक ने ठीक ही कहा है कि - "आत्मा का कर्तापन इस संसार मे अल्पकाल जीवनयापन करनेवाले नैतिक कर्ता का देहपात उसके कर्तव्य का नाश नही है। जिस संगठित एकता को मैं अपना अहम् कहता हूँ, नैतिक अनुभव इस अनुमान को उत्पन्न करता है कि मृत्यु नाम का भौतिक परिवर्तन अहम का अन्त नही है। इस प्रकार आत्मा को ससीम (Finite or Limited) मानते हैं। सृष्टि का रचयिता ईश्वर उसे नष्ट कर सकता है। ईश्वर असीम है, किन्तु आत्मा ससीम है। बर्कले ने आत्मा को ससीम की संज्ञा इसलिए दी है कि ईसाई धर्म ~~का~~ ~~प्रमाण~~ मानने वाले आत्मा कई प्रकार के प्रत्ययों को उत्पन्न नही करके केवल उन्हें ग्रहण करती है इसलिए यह ससीम है। फिर भी आत्मा की बाहरी सत्ता इसे नष्ट कर सकती है।

जार्ज बर्कले अनुसार भौतिकवाद का खण्डन :→ पाश्चात्य दर्शन के दार्शनिक देकार्त और जॉन लॉक दार्शनिक के अनुसार ही जार्ज बर्कले भी भौतिकवाद का खण्डन करते है। जिस प्रकार जॉन लॉक और देकार्त ने ज्ञानमीमांसा मे स्वीकार किया था कि मानव ज्ञान से परे भौतिक पदार्थ की स्वतंत्र सत्ता है। साथ ही ~~सब~~ इन लोगो का कहना है कि मानव ज्ञान के अन्दर विद्यमान प्रत्यय भौतिक पदार्थ की नकले या प्रतिलिपियाँ (copies) है। यह प्रतिलिपि सिद्धान्त (representative theory) है।

जार्ज बर्कले ने भी भौतिक पदार्थ की सत्ता के खण्डन करते हुए निम्नलिखित युक्तियों का सहारा लेते है। वस्तुत: जॉन लॉक का भौतिकवाद का खण्डन जार्ज बर्कले से मिलता-जुलता है क्योंकि जार्ज बर्कले एवं जॉन लॉक दोनो जड़ या भौतिकवाद मे गुण या प्रत्यक्ष के द्वारा कल्पना के आधार पर करते है। इनका कहना है कि जड़-तत्व अज्ञेय, अनुमेय, आधार जड़ द्रव्य है। यह जड़ द्रव्य ही जड़ात्मक वस्तु के अस्तित्व का सूचक है। साथ ही जड़ द्रव्य मे प्रत्यय उत्पन्न करने की शक्ति है जिसे गुण कहा जाता है। जॉन लॉक के अनुसार ही जार्ज बर्कले का दर्शन तत्व-मीमांसा और ज्ञानमीमांसा पर आधारित है क्योंकि जिस वस्तु का अनुभव नही होता उसका अस्तित्व भी स्वीकार नही किया जा सकता। क्योंकि सत्ता या अस्तित्व उपलब्धि पर आश्रित है। हमारा ज्ञान केवल प्रत्ययो तक सीमित है। हम प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ भी नही जानते है। हम बाह्य वस्तु (जड़ जगत) का प्रत्यक्ष नही होता। अत: जड़ जगत की सत्ता मान्य नही है। वस्तुत: जॉन लॉक ने जड़ द्रव्य की सत्ता को स्वीकार किया है, लेकिन जॉन लॉक जड़ द्रव्य की सत्ता सिद्ध नही कर पाते है इसलिए जड़वाद और भौतिकवाद के खण्डन करने मे जॉन लॉक का निष्कर्ष से ~~सन्देहा~~ सन्देहात्मक सिद्ध हो जाता है। क्योंकि यदि जड़ की स्वतंत्र

Scanned with CamScanner

प्रमाण भी भी लिया जाय तो ईश्वर और जड़ का द्वैत होगा स्पष्ट है इसलिए के जार्ज बर्कले का कहना है कि "जड़ द्रव्य (Matter) को स्वीकार करने का अर्थ है नास्तिकता तथा भौतिकवाद को स्वीकार करना।" इस प्रकार सन्देहवाद, नास्तिकवाद तथा अधार्मिकता के निराकरण के लिए जड़ वस्तु या जड़वाद का निषेध आवश्यक है। जड़वाद के निराकरण के लिए ही बर्कले ने सर्वप्रथम अमूर्त प्रत्यय (Abstract ideas) का खण्डन किया है क्योंकि अमूर्तीकरण बाह्य वस्तु या जड़द्रव्य के सहायक होता है।"

जार्ज बर्कले ने भौतिक पदार्थ की सत्ता को खण्डन करने के लिए निम्नलिखित युक्तियों के द्वारा भौतिकवाद का खण्डन किया है—

(i) प्रतिलिपि सिद्धान्त के द्वारा जार्ज बर्कले ने प्रतिलिपि सिद्धान्त को दोषपूर्ण माना है। उनका कहना है कि यदि हम केवल प्रत्ययों को ही साक्षात् रूप से जानें और भौतिक पदार्थ का साक्षात ज्ञान न हो तो कैसे कहा जा सकता है कि हमारे प्रत्यय भौतिक पदार्थों की सही या गलत नकलें (Copies) हैं। जहाँ तक जॉन लॉक और देकार्त की कल्पना है कि भौतिक पदार्थ का साक्षात् प्रत्यय नहीं होता तो फिर इसका नकल के साथ मिलान कैसे किया जा सकता है? इसलिए प्रतिलिपि सिद्धान्त पर आधारित भौतिक पदार्थ का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(ii) देकार्त और लॉक का कहना है कि प्राथमिक गुण (Primary qualities) भौतिक पदार्थों में पाये जाते हैं और गौण गुण (secondary qualities) अनुभव कर्ता या ज्ञाता पर निर्भर है। भौतिक पदार्थ को यहाँ प्राथमिक गुणों का ~~अज्ञात~~ आश्रय (Substratum) माना गया है। लेकिन जार्ज बर्कले प्राथमिक और गौण

गुणों के भेद को ही समाप्त कर देना चाहते हैं जिन पर भौतिक पदार्थ आधारित है। क्योंकि प्राथमिक और गौण गुण सदैव साथ रहते हैं। इनमें एक दूसरे को पृथक नहीं किया जा सकता। कोई भी विस्तार बिना रंग के नहीं हो सकता और कोई भी रंग बिना विस्तार के नहीं हो सकता। इसलिए प्राथमिक गुण सदैव गौण गुणों के साथ समवाय में रहते हैं।

जिस प्रकार रंग, गन्ध, स्वाद इत्यादि गौण गुण मन के प्रत्यय हैं ठीक उसी प्रकार विस्तार, आकार, संख्या, गति इत्यादि प्राथमिक गुण भी मन पर आश्रित हैं। जैसे- एक मील की दूरी एक छोटे बच्चे के लिए काफी दूर है, किन्तु किसी जवान के लिए वह कोई दूरी नहीं है। इसी प्रकार एक नाप मापक छड़ी किसी के लिए एक गज है। किसी के लिए तीन फीट है और किसी के लिए छत्तीस इंच है। इस तरह प्राथमिक गुण भी मन पर आश्रित हैं। प्राथमिक और गौण गुणों का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा होता है, इसलिए दोनों के बारे में जानने की विधि एक ही है। जार्ज बर्कले का कहना है कि विस्तार के अलावा आकार संख्या इत्यादि प्राथमिक गुणों की कोई संवेदना नहीं होती। जब भी हमें इसका ज्ञान होता है तो प्रत्ययों के रूप में होता है। इस प्रकार बर्कले के द्वारा सभी गुण गौण (Secondary) प्राथमिक गुण से मिलेजुले होते हैं।

लेकिन अन्य दार्शनिकों का कहना है कि प्राथमिक गुण और गौण गुण में अन्तर को मिटाकर जार्ज बर्कले [illegible] ने भौतिकवाद की आधारशिला को नष्ट कर देते हैं।

(iii) भौतिक पदार्थ का हमें प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता। बर्कले का मत है कि भौतिक पदार्थ अज्ञात होने के कारण इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता। यदि हमें जड़ पदार्थ की संवेदना तथा इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष होती तो वह रंग, स्वाद, गन्ध इत्यादि के रूप में। यदि भौतिक पदार्थ का ज्ञान इन्द्रियों द्वारा होता तो संवेदना के रूप में

क्षीण और क्षणभंगुर होगा। फिर भी जड़ पदार्थ को साधारणतः नित्य एवं स्थायी माना जा सकता। इसलिए जड़ पदार्थ का प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। क्योंकि इसका प्रत्यक्ष होगा भी तो वह प्रत्यय हो जायेगा। क्योंकि प्रत्यय मानसिक है इसलिए भौतिक पदार्थ भी मानसिक हो जायेगा। इस प्रकार मन से स्वतंत्र सत्ता के रूप में भौतिक पदार्थ को सत्य नहीं माना जा सकता।

(iv) भौतिक पदार्थ को अनुमान द्वारा भी नहीं जाना जा सकता। क्योंकि भौतिक पदार्थ अनुमान द्वारा ज्ञात होता है तो इसे प्रत्यक्ष के समान होना चाहिए। लेकिन यह स्पष्टतः सत्य है कि भौतिक पदार्थ और प्रत्यय समान नहीं हो सकते। प्रत्यय परिवर्तनशील और भौतिक पदार्थ अपरिवर्तनशील है। इन साथ ही इसका प्रत्यय अनुभूत है। लेकिन भौतिक पदार्थ अनुभूत नहीं है। इसलिए जॉन लॉक का कहना है कि हम अपने भौतिक पदार्थ के समान नहीं कर सकते है। भौतिक पदार्थ का अनुमान संभव नहीं है और प्रत्ययों का उत्पादक (cause of ideas) है। लेकिन निराधार तर्क देना सही नहीं है, क्योंकि भौतिक पदार्थ अभौतिक प्रत्ययों का कारण बन सकता है। जॉर्ज बर्कले का कहना है कि भौतिक पदार्थ (Passive and inactive) निष्क्रिय हो सकता है और सक्रिय पदार्थ (active) ही सत्ता का उत्पादक हो सकती है। इसलिए निष्क्रिय भौतिक पदार्थ प्रत्ययों का उत्पादक नहीं हो सकती है। कुछ दार्शनिकों का कहना है कि "यदि भौतिक पदार्थ प्रत्ययों का उत्पादक नहीं है तो इसे प्रत्ययों का निमित्त कारण (instrumental cause) क्या नहीं कहा जा सकता? इस तरह का तर्क देना भी निराधार है। क्योंकि निमित्त कारण की वहाँ आवश्यकता पड़ती है। जहाँ स्वतंत्र संकल्प (Free Will) से कार्य को उत्पन्न न हो फिर भी ईश्वर का संकल्प मात्र (Mere Will) किसी कार्य को उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है।